स्नातक (अनुषांगिक)
प्रथम खण्ड

चतुर्थ व्याख्यान

डा० राज कुमार राय
सहायक प्राध्यापक
मैथिली विभाग
विश्वेश्वर सिंह जनता महाविद्यालय
राजनगर (मधुबनी)

अलंकार (दृष्टान्त, समासोक्ति)

* **दृष्टान्त** :- दृष्टान्तक अर्थ होइछ उदाहरण। कोनो वाक्य कहि ओकर सत्यता प्रमाणित करबाक हेतु जखन ओही प्रकारक दोसर वाक्य कहल जाइत अछि तँ ओ दोसर वाक्य उदाहरण रूपमे आबि पहिल कथनक प्रामाणिकता पर जेना मोहर मारि दैत अछि। ठीकसँ देखलापर लगैत अछि जेना दुनू वाक्य बिम्ब प्रतिबिम्ब भावसँ सम्बन्ध अछि। जखन अएनामे हमरालोकनि अपनाकेँ देखैत छी तँ हमरालोकनि होइत छी ~~अछि~~ बिम्ब तथा अएनामे जे हमरालोकनि छाया पड़ैत अछि से होइत अछि प्रतिबिम्ब। तँ जहिना हमरालोकनि तथा हमरालोकनि छायामे अन्तर राइतहुँ भेद अछि कारण जँ हमरालोकनि सत्य छी तँ छाया असत्य, हमरालोकनि सचेतन छी तँ छाया अचेतन, तहिना दुनू वाक्य अर्थात उपमेय वाक्य एवं ~~उपमेय~~ उपमान वाक्य सर्वथा

स्वतन्त्र रहितहुँ परस्पर बिम्ब-प्रतिबिम्ब भावसँ सम्बन्ध रहैत अछि। एहि प्रकारे स्पष्ट भेल जे-

1. दृष्टान्तमे दुई टा स्वतंत्र वाक्य रहैछ।
2. दुनूमे एके टा मूल विचारे दुई रूपमे व्यक्त रहैछ, 'अर्थात' दुनूक धर्ममे सादृश्य रहैछ।
3. सादृश्यक वाचक कोनो शब्द नहि रहैछ; ओ व्यंग्य रहैछ।

अतः जत उपमेय, उपमान एवं ओकर साधारण धर्मक परस्पर बिम्ब प्रतिबिम्ब भाव रहय तँ ओत दृष्टान्त अलंकार होइछ।

उदाहरण

तत विफल हमर रचना प्रयास
रवि रहितहुँ की खद्योत भास?

एत पूर्वक कवि तथा रवि स्वयं कवि तथा खद्योत तथा प्रयासक विफलता एवं भासित होयबाक असंभवता' धर्म परस्पर बिम्ब प्रतिबिम्बभावापन्न अछि, अतः एत दृष्टान्त अलंकार भेल।

=

Scanned with CamSc

* समासोक्ति :-

समासोक्तिक अर्थ होइछ समास (संक्षेप) सँ उक्ति (कथन)। एहिमे संक्षिप्त उक्ति एहि प्रकारे रहैछ जे वर्णन तँ होइत अछि मात्र प्रस्तुतक किन्तु ओहिसँ अप्रस्तुतक प्रतीति सेहो होइत अछि। अतः जत प्रस्तुतक वर्णनसँ अप्रस्तुतक प्रतीति होइछ तत समासोक्ति अलंकार होइत अछि।

उदाहरण

कुमुदकोश कारा निलय बान्हल रविक निदेश।
अलिकुल कोँ सानन्द कर करसनि खोलि निशेश।

एत प्रस्तुत अछि सन्ध्यावर्णन जाहिमे दिनमे कुमुदिनीक मलान भ गेला पर ओहिमे बन्द भ्रमर चन्द्रोदयक पश्चात् कुमुदिनीक पुनः प्रस्फुटनसँ बहरा जाइत अछि किन्तु एत समारोप अछि चन्द्रमारूप राजाक जे शत्रु राजाक शासनमे बन्दी भेल अपन स्वपक्षकेँ अपन अधिकार भेलापर कारागारसँ मुक्त क दैत अछि।

समासोक्ति अलंकार तीन प्रकारक मानल गेल अछि-

1. विशेषण पद साम्यपर आधारित समासोक्ति।

2. लिंग सम्बन्ध आधारित समासोक्ति।
3. कार्य सम्बन्ध आधारित समासोक्ति।

विशेषण पद सम्बन्ध आधारित समासोक्ति ओकरा कहल जाइछ जत वाक्यमे एहन विशेषणक प्रयोग रहैछ जे प्रस्तुतक संग अप्रस्तुतमे सेहो घटित होइत अछि। जत प्रस्तुत एवं अप्रस्तुतमे लिंग साम्यक रहैत अछि तत लिंग सम्बन्ध आधारित समासोक्ति मानल जाइत अछि। तथा जत वाक्यमे प्रस्तुत एवं अप्रस्तुतक कार्य साम्य कथित रहैत अछि तत कार्य सम्बन्ध आधारित समासोक्ति होइत अछि।

स्रोत:- मैथिली काव्य शास्त्र - डा० दिनेश कुमार झा।

Scanned with CamSc